रात्रिक्लास 9.4.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा और वर्सा याद है?

यहां तो तुम जानते हो शिवबाबा बैठा ही है। उनके याद में बैठे हो और याद के साथ ज्ञान में भी बैठे हो ; क्योंकि बाप ही याद में भी हो, ऐसे नहीं जब सुनो तब ज्ञान में हो। तुम स्वदर्शनचक्रधारी भी हो, रचना के आदि, मध्य, अंत को भी जानते हो। ज्ञान है स्व आत्मा में। स्वदर्शनचक्रधारी हो ना। तुम बच्चों को सारी सृष्टि की नॉलेज, ज्ञान है। तुम्हारी बहुत कमाई हो रही है। कितना भी देर बैठे रहो कमाई ही कमाई है। तुम आते ही हो सच्ची कमाई लिए। सच्ची कमाई और कहां होती नहीं , जो साथ चले। इसी धुन में ही रहना है। यहां तो कोई धंधा आदि नहीं है। वायुमण्डल भी ऐसा है। तुम वायुमण्डल को शुद्ध करते हो, सारी दुनियां के वायुमण्डल को। सर्विस बहुत कर रहे हो। जो अपनी सेवा करते हैं वही भारत की सेवा कर रहे हैं। यह पुरानी दुनियां रहेगी नहीं, न तुम होंगे। सृष्टि ही नई बन जाती है। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। और कोई को नहीं है। इन सभी को किसने लाया? आप समान तुमने बनाया है ना। इतने ढेर सेन्टर्स हैं। इन सभी को तुम बच्चों ने बनाया। बच्चों ने शिक्षा पाई। पक्का निश्चय भी है। कहेंगे तो ज़रूर ना कल्प पहले जो सर्विस की है वह करते हैं। यह भी समझते हो दिन–प्रतिदिन आप समान बनाते रहते हो। इस ज्ञान को सुनकर बहुत ..... होते हैं। जब सुनते हैं तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। यह ज्ञान तो कब कोई से सुना नहीं। तुम ब्राह्मणों से ही सुनते हैं। भक्तिमार्ग में मेहनत कुछ भी नहीं है। सन्यासियों का काई आपस में सतसंग भी नहीं होता। गृहस्थी आकर बैठते हैं उनको फॉलोवर्स सन्यासी तो नहीं कहेंगे। तुम वास्तव में सभी सन्यासी हो। सारी छी–2 दुनियां को छोड़ना है। रात–दिन का फ़र्क तो है ना। यह बेहद का सन्यास बेहद का बाप ही बतलाते हैं। सभी को नम्बरवार खुशी है। एक जैसी नहीं। ज्ञान–योग भी एक जैसा नहीं। और सभी मनुष्य देहधारियों पास जाते हैं। यहां तुम उनके पास आये हो जिसको अपनी देह नहीं है। जितना पुरुषार्थ करते रहें याद का, सतोप्रधान बनते जावेंगे। जितना याद का पुरुषार्थ करते रहेंगे उतनी ही खुशी बढ़ती रहेगी। बाप के पास आते तो समझना चाहिए हमको बाप जो वर्सा दे रहे हैं उनको भाकी पहनते हैं। बाबा इनको देखते हैं तो चटक पड़ते हैं। फिर बाबा देखने की ताकत कम कर देता हूं। यह भी तो देखते हैं ना। तो खुद की कशिश कम कर देता हूं। नहीं तो खड़े हो जावेंगे। छुड़ाऊँ कैसे? इसलिए कशिश को खुद ही कमती कम कर देता हूं। मैं बैठा रहूँगा। बहुत सामने आकर बैठते हैं। देखते हैं। देखते–2 बैठेंगे ही रहेंगे जब तक मैं ऐसे (सिर नीचे करना या इधर–उधर करना) न करूँ। दोनों खड़े हो जाते हैं। ताकत कम कर दूँगा तो कशिश कम हो जावेगी। इनको भी प्रैक्टिस हो गई है तब ही कहता हूं मैं भी जैसे बाबा बन गया हूं। प्रैक्टिस तो चलती रहती है ना। आत्मा आत्मा को भी बहुत प्यार से देखा जाता है। जिससे प्यार होता है उनको देखते रहेंगे। यह भी आत्माओं का और परमात्मा का है शुद्ध प्यार। वह है भी निराकार। तुम्हारी जितनी कट उतरती जावेगी उतनी ही कशिश होती जावेगी। प्रोग्राम जो बनाया है याद का, अच्छा है। तुम्हारी तो कमाई है। भक्तों से बात ही और है। भक्त धर्मात्मा होते हैं। ज्ञान का किसको भी पता नहीं है। वैसे कोई ज्ञान में अच्छे बहुत हैं। भक्तों की भी माला बनती है ना। ज्ञान में भी माला बनते हैं। ज्ञान तो बच्चों को है ना। भक्त भी कम बहुत होते हैं। जिनको याद करते हैं उनके ऑक्युपेशन को ही नहीं जानते। गीता में क्लीयर है भगवानुवाच मामेकं याद करने से विकर्म विनाश होंगे; परन्तु कृष्ण तो है नहीं। तो उनको याद करने से क्या होगा। हमेशा दो बाप की बात सुनाओ। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। माला का दाना बनना स्कॉलरशिप है। जितना याद करेंगे सतोप्रधान बनते जावेंगे। अपनी डिग्री तुम देख सकते हो। खुशी चढ़ती जाती है। बाकी प्रोग्राम अच्छा है। बाबा तो सवेरे जागते ही हैं। है बहुत ईज़ी। आसन आदि की कुछ दरकार नहीं। आराम से बैठ याद करो। सो कर भी याद कर सकते हो। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। पाप कट जावेंगे। यह बहुत ही

सहज याद है। बेहद का बाप जो कि टीचर बनते हैं उनको तो बहुत याद करना चाहिए ना। याद करते हैं उसमें माया के विघ्न पड़ते हैं। माया कोई को छोड़ेगी नहीं। देखना है हमने बाप की याद में हर्षित हो खाना खाया। आशुक को माशुक मिला तो खुशी होगी ना। तुम्हारा जमा होता जावेगा। बाबा को तो खुशी होती है। वह बाबा सर्च–लाइट देते हैं। यह भी जैसे वह बन जाते हैं। जैसे कि एक हो जाते हैं। इसमें मूंझने की कोई बात नहीं। तुम जितना याद करते जाते हो ,जमा होता जाता है। मंज़िल बहुत बड़ी है। तुम क्या से क्या बनते हो। 84 जन्म भी लेनी पड़ती है। फर्स्ट क्लास अवस्था को जाये पाना है बच्चों को। तुम बहुत ही समझदार बनते हो। पहले तो बेसमझ थे। बाप कहते है। साधु–संत, ऋषि–मुनि आदि सभी बेसमझ, बेअक़्ल हैं। छसा बेवकूफ हैं। तुम कितने समझदार बनते हो। एमऑबजेक्ट कितना फर्स्टक्लास है। हम बाबा को याद करते हैं। पुरानी खल उतर नई चढ़ जावेगी। कर्मातीत अवस्था को पावेंगे फिर यह छोड़ देंगे। बहुत कुछ तुमको समझना है। साक्षात्कार भी हो सकता है। नज़दीक आने से घर आदि याद आते हैं ना अपने शहर की। बाबा की नॉलेज बड़ी मीठी है। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। रथ में पढ़ाते हैं। वह है भक्ति। फिर भी होगी। बच्चे आते हैं, बहुत रिफ्रेश होकर जावेंगे। यहां तुम नई बातें सुनते हो। भक्तिमार्ग में भी मनुष्यों को बड़ा मज़ा आता है शास्त्र आदि पढ़ने में। है कुछ भी नहीं। हर बात में पुरुषार्थ तो कर(ना) ही होता है। भक्तिमार्ग में पुरुषार्थ करते–2 गिरते ही जाते हैं। यहां तुम चढ़ते जाते हो। चढ़ती कला सर्व का भला है ना। तुम कोई नई बात नहीं सुनते हो। अनेक बार तुमने सुनी है वही सुनते रहते हो। कोई सुनते हैं समझ में आ जाता है। सुनते रहेंगे गद–गद होते रहेंगे। तुम हो अन–नोनवारियर्स। और बहुत वेरी वेल–नोन। देवियों की पूजा क्यों होती है तुम सारे विश्व को हेवेन बनाते हो। तो करने वाले और कराने दोनों की ही महिमा होती है। यहां तुम बहुत कमाई कर सकते हो। वायुमण्डल शुद्ध रहता है। घर में थोड़े ही ऐसा वायुमण्डल बन सकता है; इसलिए सन्यासी भी दूर चले जाते हैं। तुम बच्चियां थोड़े ही जावेंगी; परन्तु आजकल माताएं भी सन्यासियों में कनवर्ट हो जाती हैं। बच्चों को मालूम है आदि सनातन धर्म वाले ज़रूर आवेंगे, सैम्पलिंग लगावेंगे, सैम्पलिंग का रिवाज़ अभी पड़ा है। तुम अपने आप को तिलक लगाते हो। तो अच्छी रीत पढ़ते हैं वह अपने को स्कॉलरशिप लायक बनाते हैं। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।